Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 09, (फरवरी, 2026)
पृष्ठ संख्या 52–55

फसल उत्पादन बढ़ाने के तरीके

अर्पित यादव[1], अमित कुमार[2], अश्वनी कुमार मौर्य[3], राघवेंद्र कुमार कुशवाहा[4] एवं शिवम कुमार अग्रहरि[5]

[1,2]शोध छात्र, शस्य विज्ञान विभाग,
[4]शोध छात्र, मृदा विज्ञान और कृषि रसायन विभाग,
[5]परास्नातक छात्र, मृदा विज्ञान और कृषि रसायन विभाग,
[1,2,4,5]बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा उत्तर प्रदेश 210001.,
[3]शोध छात्र, शस्य विज्ञान विभाग,
चंद्रशेखर आजाद कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: amitkumarbnd124566@gmail.com

सारांश

फसल उत्पादन बढ़ाना किसानों और देश की खाद्य सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उच्च उत्पादन प्राप्त करने के लिए कई वैज्ञानिक और प्रायोगिक उपाय अपनाए जा सकते हैं। सबसे पहले, उन्नत बीजों का उपयोग करना चाहिए जो रोग प्रतिरोधी और उच्च उपज वाले हों। इसके साथ ही, मृदा परीक्षण और मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार उचित मात्रा में खाद और उर्वरक देना आवश्यक है। फसल चक्र और सह खेती अपनाने से मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और कीट रोग कम होते हैं। सिंचाई की आधुनिक तकनीकों जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर सिस्टम से पानी की बचत होती है और पौधों को पर्याप्त नमी मिलती है। मल्चिंग और जैविक खेती अपनाने से मिट्टी की नमी बनी रहती है, तापमान नियंत्रित रहता है और फसल स्वस्थ रहती है। प्राकृतिक कीटनाशकों और समेकित कीट प्रबंधन का उपयोग कीटों और रोगों से फसलों की रक्षा करता है। सरकारी योजनाएँ जैसे प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा, क्रेडिट कार्ड योजना और कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों को आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान करती हैं। इन उपायों को अपनाकर किसान उच्च गुणवत्ता वाली फसल और उत्पादन में वृद्धि प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उनकी आय बढ़ती है और देश की खाद्य सुरक्षा मजबूत होती है।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है कृषि एक मुख्य आधार है और यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। विश्व में कुल 15 कृषि प्रधान देश है। भारत का कृषि परिदृश्य जितना विशाल है उतना ही विविध भी है। भारत में सभी प्रकार की जलवायु एवं मिट्टियां पाई जाती है। इसके साथ हमारा देश फसलों में विविधता तथा जनन द्रव्य

बीजों का अनुपम भंडार है भारत में लघु और सीमांत किसान ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशीला है। वे कुल कृषि समुदाय का 85: हिस्सा है। फसल उत्पादन को बढ़ाना न केवल किसानों के लिए लाभदायक है, बल्कि यह भी खाद्य सुरक्षा और आर्थिक समृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान करता है। इस लेख में, हम कुछ मुख्य तरीके और उपायों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिनसे फसल उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। फसल उत्पादन बढ़ाना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। यहां हम कुछ महत्वपूर्ण तकनीकों को साझा करेंगे जो किसानों को फसल उत्पादन में वृद्धि करने में मदद करेंगे।

1. अधिक से अधिक जल संरक्षण

जल की व्यापारिक उपयोग को कम करने के लिए बुनियादी प्राथमिकताओं पर ध्यान दें। क्षेत्र में जल संचयन के लिए तालाब या कुंआ बनाने का विचार करें। किसानों को समय–समय पर सिंचाई करने के लिए सिंचाई प्रणालियों का उपयोग करना चाहिए।

जल संचयन एक महत्वपूर्ण पहल है जो किसानों को जल सप्लाई की सुरक्षा प्रदान करता है।

2. उर्वरकों का सही उपयोग,

उर्वरकों का सही मात्रा में और सही समय पर उपयोग करें। खाद्यांकन के लिए मौजूदा मिट्टी का टेस्ट करें और उसके आधार पर उर्वरकों का चयन करें।उर्वरकों का उपयोग सही जगह न करने से पोषक तत्व जड़ क्षेत्र से बाहर निकल जाते हैं। जिसके कारण पौधों के विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्व नहीं मिल पाते हैं और साथ ही साथ मृदा की संरचना पर कुप्रभाव पड़ता है अधिक उर्वरक मृदा में अपने अवशेष छोड़ते हैं जो की जल तथा पर्यावरण प्रदूषण का कारण बनता है उर्वरकों का प्रयोग महंगे होने के साथ–साथ दुष्प्रभावी होते हैं जिससे उत्पादन में कमी तथा लागत अधिक हो जाता है।

3. बीजों का उपयोग, सही बीज और खाद्यांकन

बीज फसल का जनन द्रव्य होता है। उचित बीज का चयन करें और समय पर बीजों का बुआई करें। प्राकृतिक बीजों का प्रयोग करने का प्रयास करें जो कि स्थानीय माहौल के लिए अनुकूल हों। बीजों को बुवाई से पहले उचित रसायन के द्वारा उपचारित करें जिससे कि बीज जनित रोगों से छुटकारा पाया जा सके। रोग व कीट रोधी किस्म के बीजों का चयन करें जिससे कि रोग व कीटों से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके।

उचित बीज और सही खाद्यांकन का उपयोग करने से फसल की उत्पादनता में वृद्धि होती है।

4. सही कृषि तकनीक

उचित कृषि तकनीक का उपयोग करें। तकनीकी उन्नति के साथ नवाचारों का संचार करें और अद्यतन रहें। नवीनतम कृषि तकनीकों का उपयोग करें जो किसानों को उत्पादकता में सुधार कर सकती है।

- कृषि उत्पादन लागत में कमी लाना ।
- जलवायु आधारित फसल हानि से सुरक्षा।
- फसल अवशेषों का उचित प्रबंध।
- पर्यावरण संतुलन एवं प्रदूषण नियंत्रण।
- मृदा स्वास्थ्य एवं गुणवत्ता में सुधार।
- स्थानीय स्वरोजगार एवं कृषक आय में वृद्धि।

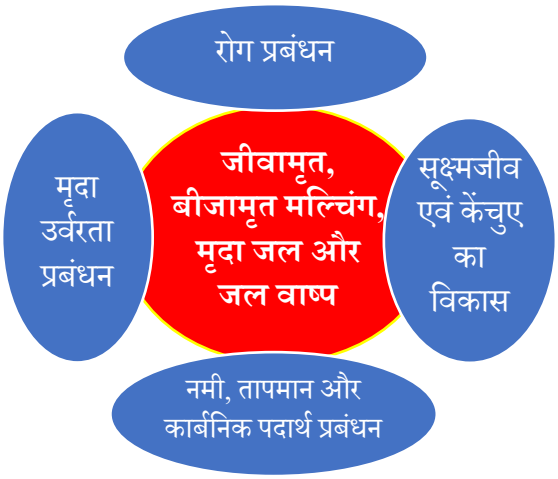

a) **जुताई:** इसमें शून्य कर्षण को प्राथमिकता दी जाती है तथा केंचुए की संख्या बढ़ने पर जोर दिया जाता है जिससे की मृदा की उर्वरा शक्ति बनी रहे।

b) **जल प्रबंध:** वर्षा जल संचय तथा नमी संरक्षण पर ध्यान दिया जाता है।

c) **पौधों की दिशा:** फसल बुवाई प्रायः उत्तर दक्षिण दिशा में करते हैं तथा सौर ऊर्जा का अधिकतम उपयोग करने से उपज में वृद्धि होती है।

d) **फसल चक्र:** ऐसे फसल चक्र का चयन करते हैं जो जलवायु तथा मृदा उर्वरता पर आधारित हो तथा फसल उत्पादन प्रदान करें। एक ही खेत में निश्चित समय पर अलग–अलग फसलों को क्रम से उगाने की विधि। इससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है, कीट–रोग कम होते हैं और उत्पादन बढ़ता है।

e) **सह खेती:** एक ही खेत में एक साथ दो या अधिक फसलों की खेती करना। इससे भूमि का बेहतर उपयोग होता है, जोखिम कम होता है और कुल उपज बढ़ती है।

f) **मल्चिंग (फसल अवशेष आवरण):** फसल अवशेषों का उपयोग करते हुए मृदा को ढक देते हैं जिससे वर्ष भर मृदा के अनुकूल नमी तथा तापक्रम बना रहता है साथ ही खरपतवारों का नियंत्रण भी होता है। खेत की मिट्टी को घास, भूसा, पॉलिथीन या अन्य सामग्री से ढकने की विधि को मल्चिंग कहते हैं। इससे मिट्टी में नमी बनी रहती है, खरपतवार कम होते हैं, तापमान संतुलित रहता है और फसल की पैदावार बढ़ती है।

5. कीट व रोग प्रबंधन: फसलों पर अनेक रोग व किट आक्रमण करते हैं जिससे फसलों की उपज गिर जाती है और किसान को काफी नुकसान होता है। कीटों एवं रोगों का नियंत्रण जैविक, रासायनिक, भौतिक,

यांत्रिक व सस्य क्रियाओं के उचित प्रयोग से किया जा सकता है बुवाई के समय में परिवर्तन करके कीट व रोगों का प्रभाव काम किया जा सकता है, किट व रोग रोधी किस्म का चुनाव करें, भौतिक व यांत्रिक रूप

से कीटों को पड़कर खत्म कर दें। अत्यधिक संक्रमित फसल व उसके अवशेष को इकट्ठा करके भूमि में दबा देना चाहिए या जला देना चाहिए।

6 प्राकृतिक कीटनाशकों का उपयोगः सही कीट प्रबंधन तकनीकों का उपयोग करें जो किसानों को बीमारियों और कीटों से बचाए। रासायनिक दवाओं के स्थान पर नीम, लहसुन, मिर्च, गोमूत्र व जैविक पदार्थों से बने कीटनाशकों का प्रयोग। इससे कीट नियंत्रण होता है, लागत कम होती है और मिट्टी व पर्यावरण सुरक्षित रहते हैं।

7: अनुसंधान और विकास

a) **सरकारी योजनाः** कृषि से जुड़ी सरकारी योजनाएँ वे कार्यक्रम हैं जिन्हें सरकार किसानों के लाभ के लिए शुरू करती है। इन योजनाओं का उद्देश्य खेती की लागत कम करना, उत्पादन बढ़ाना, किसानों की आय में वृद्धि करना और जोखिम से सुरक्षा देना है। इनके अंतर्गत बीज, खाद, सिंचाई, बीमा, ऋण, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है। यहाँ कुछ प्रमुख कृषि से जुड़ी सरकारी योजनाओं के नाम दिए गए हैं:

- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
- क्रेडिट कार्ड योजना
- प्रधानमंत्री मानधन योजना
- पशुधन बीमा योजना
- मृदा स्वास्थ कार्ड योजना
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना
- जैविक खेती योजना
- प्रधानमंत्री कुसुम योजना

निष्कर्ष

फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक तकनीक, उचित कृषि प्रबंधन और सही संसाधनों का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। उन्नत बीज, मृदा स्वास्थ्य के अनुसार उर्वरक, फसल चक्र, सह खेती, और आधुनिक सिंचाई तकनीकों से उत्पादन में वृद्धि संभव है। मल्चिंग, जैविक खेती और प्राकृतिक कीटनाशकों के प्रयोग से फसल स्वस्थ रहती है और पर्यावरण सुरक्षित रहता है। सरकारी योजनाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम किसानों को आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान करते हैं। इन सभी उपायों को अपनाकर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं और देश की खाद्य सुरक्षा मजबूत बना सकते हैं।